Date :

HISTORY (H)

PAPER – III
B.A – II.

B. Polity – Pratihars –
(political development)

गुर्जर - प्रतिहार राजवंश का राजनैतिक इतिहास

हर्ष की मृत्यु के बाद उत्पन्न राजनीतिक अस्थिरता की स्थिति में विभिन्न राजपूत राजवंशों का उदय हुआ। उनमें से एक गुर्जर-प्रतिहार वंश था। इस वंश की उत्पत्ति गुजरात और दक्षिण पश्चिम राजस्थान में हुयी थी। इस वंश का प्रथम शासक हरिशचन्द्र था। परंतु इस वंश का वास्तविक संस्थापक नागभट्ट प्रथम ने·

Scanned with CamScanner

Date :

की।

इसकी प्रारंभिक राजधानी भीनमाल थी। इसके बाद प्रतिहारों ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया। पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में सर्वप्रथम इस वंश का नामोल्लेख हुआ है। इसवंश की तीन शाखाएँ थी। इसकी सबसे प्रमुख शाखा उज्जैन (अवंति) में थी। चंदेल, चौहान गहड़वाल उसके सामंत थे।

→ नागभट्ट प्रथम (730 से 756 ई०)

ग्वालियर प्रशस्ति में इसे म्लेच्छों (अरबों) का विनाशक कहा गया है। इसने अरबों से टक्कर ली और पश्चिमभारत में सुदृढ़ राजवंश की स्थापना की। उसने अरबों के शासक जुनैद को पराजित किया।

Scanned with CamScanner

Date :

⇒ वत्सराज :

इसके समय कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत हुई। इसने पाल वंश के शासक धर्मपाल को हराया। परंतु यह राष्ट्रकूट शासक ध्रुव से पराजित हुआ। इसके बाद यह राजपूताना के शासक के लिए विवश हो गया। इसकी मृत्यु के बाद इसका पुत्र नागभट्ट द्वितीय शासक बना।

⇒ नागभट्ट द्वितीय (800 से 833 ई०)

सर्वप्रथम इसी ने कन्नौज पर अधिकार कर अपनी राजधानी बनाया। नागभट्ट ने चौहानों को अपना सामंत बनाया। इसने मुंगेर के युद्ध में धर्मपाल को हराया। परंतु बाद में यह राष्ट्रकूट नरेश गोविन्द तृतीय से हार गया। अंत में इसने गंगा में समाधि ले ली। इसके बाद

Scanned with CamScanner

Date : ________

रामभद्र तदुपरांत मिहिरभोज शासक बना।

⇒ मिहिरभोज प्रथम (836 से 885 ई०)

इसकी उपाधि आदिवराह और प्रभास थी। वराह अभिलेख मिहिरभोज का अभिलेख है। ग्वालियर अभिलेख से गुर्जर प्रतिहार वंश के शासकों की राजनीतिक उपलब्धियों एवं उसकी वंशावली का पता चलता है। इसी अभिलेख से मिहिरभोज की आदिवराह की उपाधि धारण की।

दौलतपुर अभिलेख से यह ~~प्रभास~~ प्रभास कहा गया है। इसके सिक्के पर वराह-शिरोधारी मनुष्य की आकृति से ज्ञात होता है कि यह खुद विष्णु का अवतार मानता था। स्कंद पुराण के अनुसार

Scanned with CamScanner

Date :

उसने तीर्थयात्रा करने के लिए राज-पाट अपने पुत्र के पक्ष में त्याग दिया।

→ महेन्द्रपाल प्रथम (890 से 910 ई०)

इस समय प्रतिहार शक्ति अपने चरम सीमा पर पहुँच गयी। इनका साम्राज्य हिमालय से विंध्य और पूर्व में समुद्र से पश्चिम में समुद्र तक पहुँच गया। इसके राजकवि और राजगुरु राजशेखर थे। राजशेखर ने कर्पूरमंजरी, काव्य मीमांसा, बालरामायण, हरविलास जैसे प्रसिद्ध चौदह ग्रंथों की रचना की। राजशेखर की रचनाओं में कन्नौज के वैभव का विवरण मिलता है। इसने राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र तृतीय से पराजित किया। परन्तु यह कश्मीर के शासक से हार गया।

Scanned with CamScanner

Date :

⇒ महीपाल प्रथम (912 – 944ई०)

राजशेखर ने इसे आर्यावर्त का महाराजधिराज कहा। कन्नड़ लेखक पम्पा ने इसे गुर्जरराज कहा। इसी के समय 915ई० में अलमसूदी भारत (गुजरात) आया। इसने चार सेनाओं का गठन किया। इसका शासन-काल शांति एवं समृद्धि का था।

⇒ राज्यपाल –

इसी के समय 1018 ई० में महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण किया। राज्यपाल कन्नौज छोड़कर भाग गया। इसकी इसी कायरता के कारण चंदेल शासक विद्याधर ने इसे पराजित कर समाप्त कर दिया। 1019 ई० में राजा-

Scanned with CamScanner

Date :

पाल का पुत्र त्रिलोचन पाल को महमूद गजनवी ने पराजित किया।

⇒ यशपाल :

यह अंतिम गुर्जर - प्रतिहार शासक था। बाद में गहड़वालों ने कन्नौज पर अधिकार कर इसे वंश का अंत कर दिया।

DR. UDAY KUMAR.
DR. L.K.V.D. College Jaipur

Scanned with CamScanner